पर्दे के पीछे स्त्री

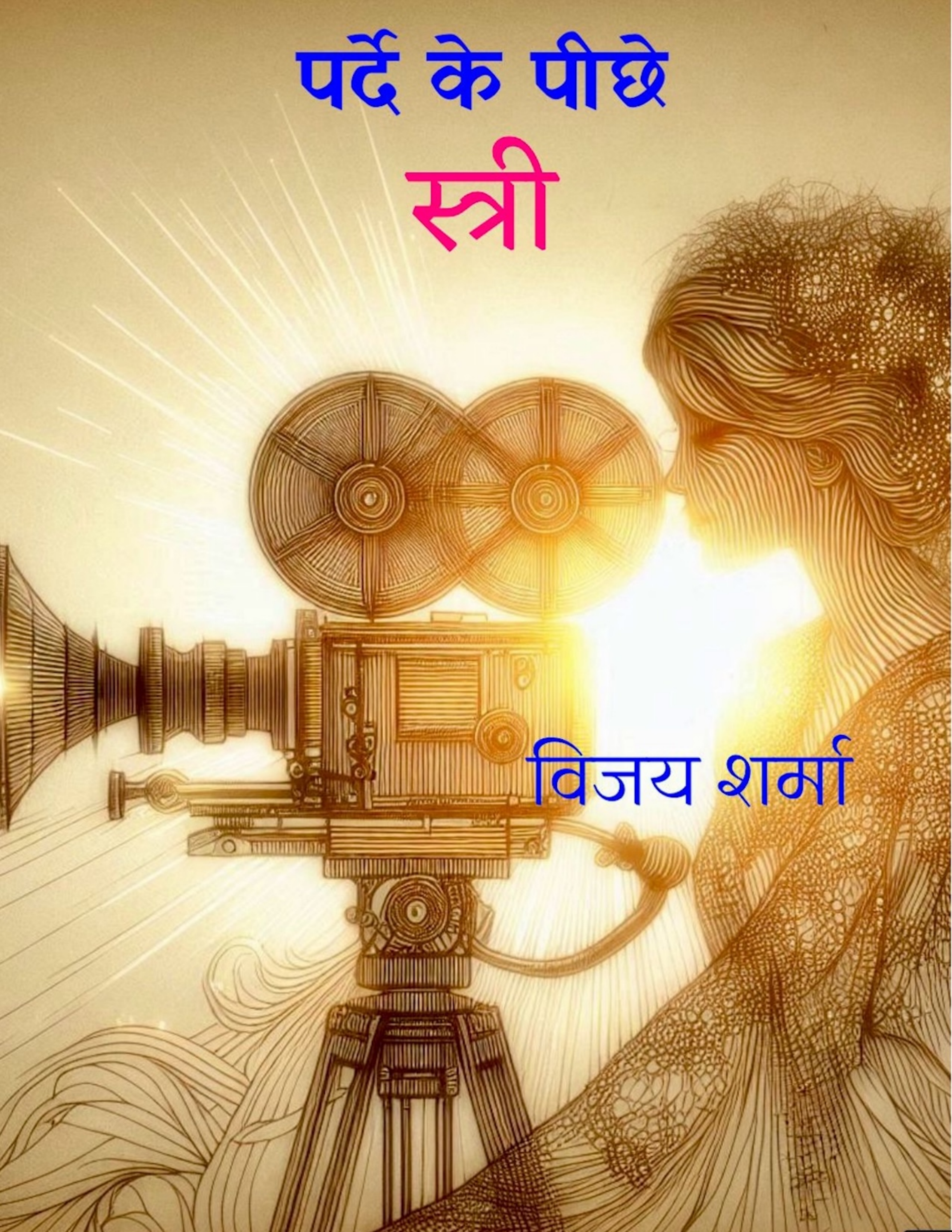

विजय शर्मा

परदे के पीछे स्त्री

विजय शर्मा

प्रकाशक: नॉटनल

प्रकाशन: जून, 2025

© विजय शर्मा

अनुक्रम

अपनी बात 4

डोरोथी अर्ज़नर (Dorothy Arzner): पुरुष वर्चस्व में सेंध 7

लेनी रिफ़ेंस्थाल (Leni Riefenstahl): हिटलर की गिरफ़्त में निर्देशक 13

ली ब्रैकेट (Leigh Brackett): द क्वीन ऑफ़ स्पेस ऑपेरा 30

एग्नेस वार्दा (Agnes Varda): न्यू वेव सिनेमा की पुरोधा 35

भानू अथैया (Bhanu Athaiya): पहला ऑस्कर लाने वाली 41

विजया मेहता (Vijaya Mehta): नाटक एवं सिनेमा दोनों में कुशल 50

सई परांजपे (Sai Paranjape): प्रमुख महिला स्क्रिप्ट राइटर 57

नोरा एफ़्रॉन (Nora Ephron): स्क्रीनप्ले में रोमांस-कॉमेडी का तड़का 62

सारा गोमेज़ (Sara Gómez): एकमात्र फ़िल्म 67

पेनेलोपी स्फ़ीरीस (Penelope Spheeris): रॉक डॉक्यूमेंट्री 76

मंजीरा दत्ता (Manjira Dutta): ताजिंदगी डॉक्यूमेंट्री निर्देशक 80

गिलियन आर्मस्ट्रॉन्ग (gillian-armstrong): ऑस्ट्रेलिया की रचनात्मकता 89

सिने-एडिटर: बिंदास रेणु सलूजा (Renu Saluja) 95

जूली डैश (Julie Dash): कमाल की निर्देशक 104

ऊज़ान पैल्सी (Euzhan Palcy): हॉलीवुड अश्वेत निर्देशक 110

कॉस्ट्यूम डिजाइनर डॉली अहलूवालिया (Dolly Ahluwaliya) 117

विजयलक्ष्मी (Vijaylaxmi): एशिया की प्रथम सिनेमाटोग्राफ़र 122

लेस्ली हैरिस (Leslie Harris): विज्ञापन से फ़िल्म की ओर 127

बीना पॉल (Beena Paul): कई पदों को सुशोभित करती संपादक 132

जूली डार्टनेल (Julie Dartnell): अभिनेता को पात्र बनाती 136

रीना यंग (Rina Yang): ब्रिटिश सिनेमाटोग्राफ़र्स सोसायटी में पहली एशियाई स्त्री 140

रेचल मॉरीसन (Rechal Morrison): स्त्रियों के लिए खोली नई राह 146

स्क्रीनप्ले राइटर अंजलि मेनन (Anjali Menon) 150

सुधा कोंगारा (Sudha kongara): बहुभाषीय सिने-निर्देशक 156

जेसिका एंडरसन क्रोकर (Jessica Anderson Crocker): अभिनेता को पात्र बनाने वाली 162

अपनी बात

रोमन पोलांस्की ने कहा है, ‘आप किसी भी प्रकार की फ़िल्म बनाएँ, इसे एक क्रू की आवश्यकता होती है, वित्तीय व्यवस्था चाहिए होती है, आपके आसपास बहुत सारे लोगों की जरूरत होती है।’ फ़िल्म निर्माण एक सामूहिक कर्म है। अधिकांश दर्शक अभिनेता-अभिनेत्री के चेहरे एवं नाम से परिचित होते हैं, कुछ लोग निर्देशक का नाम भी जानते हैं। बाकी लोगों से उन्हें खास मतलब नहीं होता है। यहाँ तक की समीक्षक भी इन्हीं पर अटक कर रह जाते हैं, कदाचित ही सिनेमा से जुड़े अन्य लोगों के काम की चर्चा करते हैं, जब तक कि किसी को कोई पुरस्कार न मिल जाए।

हालाँकि परदे पर जब फ़िल्म चलती है तो सिनेमा से जुड़े हर व्यक्ति का नाम वहाँ क्रेडिट में दर्ज रहता है। यदि क्रेडिट फ़िल्म के प्रारंभ में हुआ तो थियेटर में लोग उसके रोल होने के बाद पहुँचते हैं, यदि फ़िल्म मोबाइल/कम्प्यूटर पर देख रहे हैं तो उसे आगे सरका देते हैं, यदि अंत में हुआ तो तब तक हाल खाली हो चुकता है, मोबाइल/कम्प्यूटर दूसरे साइट पर सरक चुका होता है। कहने का मतलब है जनता को सिनेमा से जुड़े अन्य लोगों में कोई रूचि नहीं होती हैं।

मगर एक बार सोचिए यदि मेकअप आर्टिस्ट न होता तो क्या आपको हिरोइन इतनी ही खूबसूरत नजर आती? यदि ड्रेस डॉयरेक्टर न रहे तो नए-नए फ़ैशन कैसे चलन

में आए? एडिटर न हो तो हजारों फ़ुट की लंबाई की शूट की हुई बेतरतीब फ़िल्म देखने कौन जाता, किसको उसका सिर-पैर नजर आता? और अगर सिनेमाटोग्राफ़र न होता तो क्या फ़िल्म बनती? यदि स्टंडमास्टर न हो तो बिचारा हीरो खलनायक एवं उसके गुंडों को कैसे से पछाड़ता? मतलब इन और इन जैसे ढ़ेर सारे लोगों के बिना फ़िल्म बनने की कोई संभावना नहीं है। ये सारे लोग फ़िल्म निर्माण का हिस्सा होते हैं, इन्हें भी पहचान मिलनी चाहिए, ये भी क्रेडिट डिजर्व करते हैं।

इस बात को ध्यान में रखते हुए यह कार्य प्रस्तुत है। इसमें कुछ सिनेमाटोग्राफ़र, एकाध कॉस्ट्यूम आर्टिस्ट, थोड़े-से एडिटर, मेकअप आर्टिस्ट के कार्य, जीवन एवं महत्व को रेखांकित करने का प्रयास यह पुस्तक, 'परदे के पीछे स्त्री' है। इसमें कई अनोखी डॉयरेक्टर शामिल है, फ़िल्म तो उसी का विजन होती है, वही कर्ताधर्ता होता है, बाकी सारे लोग उसके सहयोगी होते हैं, उसके विजन को साकार करने में उसका साथ देने वाले। जैसा नाम से नजर आ रहा है, इस पुस्तक में सिनेमा निर्माण में परदे के पीछे इन विभिन्न कार्यों से जुड़ी स्त्रियों को ही लिया गया है। उम्र के अनुसार वरिष्ठता तय करते हुए उनके जन्म वर्ष के अवहोरी क्रम में अनुक्रम रखा है। बहुत खोजने पर भी जेसिका एंडरसन क्रोकर का जन्मवर्ष पता न चल सका, मगर उन्हें रखना महत्वपूर्ण लगा, अत: उन्हें सबसे अंत में शामिल किया है।

यह इस दिशा में किए गए प्रयास की शुरुआत है। यह क्षेत्र इतना विशाल है, जितना डूबेंगे, उतने ज्यादा मोती मिलेंगे। हिन्दी में सिनेमा से जुड़ी सामग्री का बहुत अभाव है। इस दिशा में बहुत कार्य होने की आवश्यकता एवं संभावना है। शायद यह कार्य मैं ही आगे बढ़ाऊँ या कोई अन्य इसका बीड़ा उठाए।

नॉटनल.कॉम के नीलाभ श्रीवास्तव से पुराना रिश्ता है, उन्होंने मेरे कई कार्य प्रकाशित किए हैं। इसके लिए भी वे आगे आए हैं, उन्हें धन्यवाद। सखा सत्य के जन्मदिन पर सोचा, यही उपहार दिया जाए। उन्हें जन्मदिन की असीमित शुभकामनाएँ। अनघा को प्यार!

पाठकों के सुझाव का स्वागत है।

विजय शर्मा

मई 2025

जमशेदपुर